7

आदमी जिसने जान बचाई

(2 राजाओं 8:1-6)

एलीशा और शूनेमिन स्त्री की कहानी नबी को जीवन दाता, जिलाने वाले और जान बचाने वाले के रूप में दिखाती है।[1] हम ने उसे जीवन दाता के रूप में देखा था। जब उसकी मेज़बान को लड़के की आशीष मिली थी। उसे हमने जिलाने वाले के रूप में देखा था, जब उसने परमेश्वर की सहायता से लड़के को जिला दिया था। इस पाठ में हम उसे जीवन बचाने वाले के रूप में देखेंगे, क्योंकि परमेश्वर ने उसके शब्दों और प्रभाव को स्त्री और उसके बेटे के जीवन सुरक्षित रखने के लिए इस्तेमाल किया।

इस तथ्य को नज़रअन्दाज़ न करें कि इन सभी घटनाओं में जीवन देने वाला, जिलाने वाला और बचाने वाला ''*यहोवा* ही था और एलीशा केवल उसका एक माध्यम था।'' आज *भी* जीवन का देने वाला परमेश्वर ही है। वह शारीरिक जीवन का देने वाला है। पौलुस ने कहा कि ''वह तो आप ही सब को जीवन देता है'' (प्रेरितों 17:25)। वह आत्मिक जीवन का देने वाला है। यीशु ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वह इसलिए आया ताकि हम ''जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)। शूनेमिन स्त्री की तरह हमें भी बार बार ''जीवते परमेश्वर'' की ओर से आशीष मिली है (1 तीमुथियुस 4:10)। समाप्त करने से पहले मैं पूछना चाहूंगा कि आपने परमेश्वर के अनुग्रहकारी उपायों का लाभ उठाया है या नहीं।

अकाल के दौरान परमेश्वर की सम्भाल (8:1, 2)

इस पाठ के लिए हम 2 राजाओं के कई अध्याय छोड़कर 8 अध्याय में जा रहे हैं। शूनेमिन स्त्री के लड़के को एलीशा द्वारा जिलाने के बाद कई साल बीत गए। इस दौरान एलीशा और गेहाजी निश्चित रूप से उस स्त्री के आतिथ्य सत्कार का आनन्द लेते होंगे। इसके अलावा इन्हीं वर्षों के दौरान उस स्त्री का पति, जो बूढ़ा था, स्पष्टतया मर गया।[2]

कहानी के आरम्भ में नबी फिर से परमेश्वर की आतिथ्य सत्कार करने वाली सेविका के सामने था। शायद वह रास्ते में कर्मेल पहाड़ से आते या उधर को जाते हुए रुक गया। ''जिस स्त्री के बेटे को एलीशा ने जिलाया था, उस से उस ने कहा था कि अपने घराने समेत यहां से जाकर जहां कहीं तू रह सके वहां रह; क्योंकि यहोवा की इच्छा है कि अकाल पड़े,[3] और वह इस देश में सात वर्ष तक बना रहेगा'' (आयत 1)।

''*यहोवा* की इच्छा है कि अकाल पड़े'' शब्दों पर ध्यान दें, अकाल एक ईश्वरीय दण्ड था। अपने लोगों के साथ वाचा में परमेश्वर की वाचा में पहली आज्ञा थी ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना'' (निर्गमन 20:3), परन्तु उत्तरी राज्य ने उस आज्ञा को नज़रअन्दाज़ कर दिया था। यहोवा ने चेतावनी दी थी:

> यदि तुम इन बातों के उपरान्त भी मेरी न सुनो, तो मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सातगुणी ताड़ना और दूंगा, और मैं ... तुम्हारे लिए आकाश को मानो लोहे का और भूमि को मानो पीतल की बना दूंगा; ... क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी उपज न उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने फल न देंगे (लैव्यव्यवस्था 26:18-20)।

परमेश्वर अपने लोगों को दण्ड देने (देखें हाग्गै 1:9-11) और उन्हें मन फिराव के बुलाने के लिए (देखें 1 राजाओं 8:35-40) अकालों का इस्तेमाल करता था। एलिय्याह के समय में परमेश्वर ने साढ़े तीन साल का अकाल भेजा था (देखें 1 राजाओं 17:1; याकूब 5:17)। अब उसने उस अकाल से दोगुणा भेजना था यानी यह अकाल सात साल तक रहना था (उत्पत्ति 41:27 से तुलना करें)। एलीशा आने वाली विपत्ति की कठिनाई से उस स्त्री को बचाना चाहता था। उसने उससे अकाल रहने तक अपने घराने को वहां से ले जाकर कहीं और रहने के लिए कहा (रूत 1:1, 6 से तुलना करें)।

एक आपत्ति उठती है: ''यदि देश का न्याय मूर्तिपूजा के कारण हुआ तो यह उस स्त्री पर क्यों आना चाहिए था? वह तो मूर्तिपूजा की दोषी नहीं थी।'' यदि आपने अभी तक यह सबक नहीं सीखा है तो अभी सीख लें कि सारी मनुष्यजाति एक ही सूत्र में है (देखें रोमियों 14:7) और जो बात एक को प्रभावित करती है वह दूसरों को भी प्रभावित करती है। पाप के कारण यह संसार श्रापित हो गया है (देखें उत्पत्ति 2:17; रोमियों 5:12) और इसके कारण दोषियों के साथ-साथ निर्दोष भी दुख उठाते हैं। मेरे दिमाग में रोमानिया के उन अबोध बच्चों सहित जिन्हें aids (एडज़) इसलिए हो गया क्योंकि उन्हें सुइयां स्टरलाइज़ किए बिना टीके लगा दिए गए, इस सच्चाई के कई उदाहरण आते हैं। एलीशा स्त्री को देश के पापों के कुछ परिणामों से बचाना चाहता था, तो उसने उससे इस्राएल में से निकल जाने का आग्रह किया।

नबी के निर्देशों को मानना शूनेमिन स्त्री के लिए आसान नहीं रहा होगा। अपने परिवार और मित्रों के निकट जहां वह रह रही थी उसे अच्छा लगता था (देखें 2 राजाओं 4:13)। इसके अलावा एलीशा के बात करने के समय अकाल का कोई चिह्न नहीं होगा। घास अभी भी हरी होगी, फूल अभी भी खिल रहे होंगे और खेतों में अभी भी फल लगता होगा। अपने पूरे घराने को किसी दूसरे देश में ले जाना विश्वास का एक कार्य होना था। इससे पहले स्त्री को नबी की बातों को स्वीकार करने में कठिनाई आई थी (2 राजाओं 4:16, 28)। परन्तु अब उसने झिझक नहीं की। ''परमेश्वर के भक्त के इस वचन के अनुसार वह'' (2 राजाओं 8:2क) चली गई। त्रासदी और उसके बाद की घटनाओं ने उसके विश्वास को मज़बूत कर दिया था। परेशानी आपके लिए यह काम कर सकती है (देखें रोमियों 5:3, 4; याकूब 1:3)।

''वह स्त्री अपने घराने समेत पलिश्तियों के देश में जाकर सात वर्ष रही'' (2 राजाओं 8:2ख)। पलिश्ती लोग आम तौर पर परमेश्वर के लोगों के शत्रु होते थे (देखें 1 शमूएल 4:10; 13:5)। परन्तु हमारी कहानी के समय में इस्राएल का युद्ध पलिश्त के साथ नहीं बल्कि अराम (सीरिया) के साथ था (2 राजाओं 5:2; 6:8, 24)। ''पलिश्तियों के देश'' (पलिश्ती देश) तट पर था। (''एलीशा के समय में इस्राएल, यहूदा और आस-पास के देश'' मानचित्र देखें।) उपजाऊ पलिश्तीन मैदान पहाड़ी क्षेत्र की तुलना में अकाल से कम प्रभावित होना था।

इसके अलावा उस क्षेत्र के लोग समुद्र से भी समान ले सकते थे। इसलिए स्त्री ने वहीं पर जाना चुना (2 राजाओं 8:2ग)।

दुर्व्यव्यवहार के दौरान परमेश्वर का उपाय (8:3-6)

अकाल खत्म होने के बाद, ''सात वर्ष के बीतने पर वह पलिश्तियों के देश से लौट आई'' (आयत 3क)। शूनेम में पहुंचकर वह अवश्य स्तब्ध रह गई होगी। उसके घर में कोई और परिवार रह रहा था! उसके खेतों में कोई और काम कर रहा था! शायद किसी बेईमान पड़ोसी या लालची ससुराल वालों ने उसकी सम्पत्ति पर कब्जा कर लिया था। हो सकता है यह राजा द्वारा जब्त कर लिया गया हो (देखें 1 राजाओं 21:15)। लाचार विधवाओं को आम तौर पर छल से निशाना बनाया जाता रहा है (देखें यशायाह 10:2; मत्ती 23:14)।

पहले एलीशा ने स्त्री की ओर से राजा से बातचीत करने की पेशकश की थी (2 राजाओं 4:13), पर उसने उसकी पेशकश ठुकरा दी थी। अब अपनी सम्पत्ति वापस लेने की कोशिश के लिए उसे स्वयं राजा से विनती करनी पड़ी थी (8:3ख)। डॉनल्ड वाइज़मैन के अनुसार, ''भू-धारण के सभी मामलों की अपील राजा के दरबार में ही की जाती थी।''[4] अपना केस प्रस्तुत करने के लिए तैयारी करते हुए स्त्री घबराई हुई होगी। आम तौर पर शाही नीति में स्त्री की बात का महत्व कम होता था।

जो बात शूनेमिन स्त्री को पता नहीं थी वह यह थी कि परमेश्वर उसके लिए मार्ग तैयार कर रहा था। शाही कमरों में उसके जाने के समय, ''राजा परमेश्वर के भक्त के सेवक गेहजी से बातें कर रहा था'' (आयत 4क)। हमें नहीं मालूम कि गेहाजी वहां क्यों था। शायद एलीशा ने उसे राजा के नाम संदेश देकर भेजा था। शायद प्रसिद्ध नबी के बारे में उत्सुक राजा ने उसके सेवक की उपस्थिति में विनती की थी।[5] जो भी हो गेहाजी सम्राट के पास था और राजा ने कहा, ''जो बड़े बड़े काम एलीशा ने किए हैं उन्हें मुझ से वर्णन कर'' (आयत 4ख)।

पक्का तो पता नहीं हो सकता कि राजा कौन था ''सात वर्ष का अकाल योराम के शासन के मध्य में पड़ा था,[6] तो सम्भवतया 2 राजाओं 8:1-6 वाला राजा योराम ही था। परन्तु सम्भव है कि वह येहू नामक बाद वाला राजा हो।[7] ''इससे सचमुच में कोई फर्क नहीं पड़ता कि राजा *कौन* था।''[8] इस वचन में परमेश्वर का उद्देश्य राजाओं की नुमाइश लगाना नहीं बल्कि यह दिखाना था कि विश्वास और आज्ञापालन का प्रतिफल कैसे मिला।

यदि राजा योराम था, तो उसे पहले से पता था कि एलीशा ने एदोम के जंगल में सेना को कैसे बचाया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने अन्य अद्‌भुत कामों की बातें भी सुनी थीं। अब उसने सम्पूर्ण विवरण मांगा। गेहजी सम्भवतया अपनी ओर ध्यान किए जाने से फूल गया होगा और प्रश्न पूछने से रोमांचित हुआ होगा। मैं उसे यह बताने की कल्पना करता हूं कि एलीशा ने बुरे पानी को कैसे शुद्ध किया, कैसे इस नबी ने तेल को बढ़ाया और इस प्रकार जवान छोकरों को जिन्होंने उसके गंजे सिर का मज़ाक उड़ाया था दण्ड देने में योगदान दिया था। (यदि राजा गंजे सिर वाला था, तो उसे अन्तिम कहानी अच्छी लगी होगी।) बेशक इस विवरण की मुख्य बात थी कि एलीशा ने कैसे एक मुर्दा लड़के को जिलाया। मुर्दे को जिलाना अद्‌भुत काम करने वालों के बीच में भी रोज़ होने वाली बात नहीं थी। पुराने नियम में मुर्दों को जिलाने के केवल तीन विवरण

हैं (1 राजाओं 17; 2 राजाओं 4; 13), उनमें से भी दो एलीशा से जुड़े हैं।

गेहजी के अपने रोमांचकारी विवरण बताने के बीच में, सिंहासन के कमरे में वह स्त्री और उसका बेटा ही आ गए (2 राजाओं 8:5क)! यह कोई संयोग नहीं, बल्कि मामले का प्रबन्ध करने वाला परमेश्वर था, ताकि राजा उस स्त्री से प्रभावित हो और उसकी विनती को मान ले। हम इसे परमेश्वर का *उपाय* (रोमियों 8:28) कहते हैं जिसमें परमेश्वर प्राकृतिक नियम के द्वारा उपाय करता है। प्रभु के ढंग कितने अद्‌भुत हैं!

गेहजी उस स्त्री को देखकर चकित था। मैं उसे उसकी ओर इशारा करते हुए और अपनी आवाज़ में रोमांच भरते हुए देखने की कल्पना कर सकता हूं, ''हे मेरे प्रभु! हे राजा! *यह* वही स्त्री है और यही उसका बेटा है जिसे एलीशा ने जिलाया था'' (2 राजाओं 8:5ख)। इसमें सुझाव का संकेत है कि ''तू अपने लिए कुछ भी मांग सकती है!'' हाकिम ने स्त्री से कहानी की पुष्टि करने के लिए कहा। अपने प्रिय पुत्र को गले लगाते और कहानी को दोबारा बताते हुए जो उसके अपने होंठों से कई बार बताई गई थी, उसके चेहरे पर मुस्कान होगी (आयत 6क)।

राजा प्रभावित हो गया। ''विधवा और उसका बेटा उन लोगों के लिए जो प्रभु के नबियों के द्वारा उसके वचन को मानते थे प्रभु के उपाय तथा आशीष का सजीव उदाहरण थे।''[9] स्पष्टतया सम्राट ने निष्कर्ष निकाला कि उसे उस स्त्री का पक्ष लेना चाहिए जिसका ऐसे आदमी से नज़दीकी सम्बन्ध था जिसके पास जीवन और मृत्यु की शक्ति थी। वास्तव में राजा ने उसकी विनती से कहीं *बढ़कर* करने का निश्चय किया। उसने अपनी सम्पत्ति वापस मांगी थी पर उसने उस सम्पत्ति से मिला कोई भी लाभ वापस कर देना था।[10] उसने उसके केस के लिए ''एक विशेष अधिकारी'' नियुक्त किया और उसे निर्देश दिया, ''जो कुछ इसका था वरन जब से इस ने देश को छोड़ दिया तब से इसके खेत की जितनी आमदनी अब तक हुई हो सब इसे फेर दे'' (आयत 6ख)।

निश्चय ही वह स्त्री राजा के महल से आनन्द करती हुई बाहर गई। उसकी सम्पत्ति वापस मिल गई थी, एलीशा के साथ उसके सम्बन्ध का धन्यवाद। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि अब नबी को उसके घर में और भी आदर मिलता होगा और वह जब भी उस गांव में से गुज़रता वहां समय बिताता होगा। उस सकारात्मक बात के साथ हमें एलीशा और शूनेमी स्त्री की कहानी को यहीं छोड़ना होगा।

सारांश

पाठ के अन्त में मैं आपको याद दिलाता हूं कि *परमेश्वर हमारा* भी जीवन दाता, जिलाने वाला और रक्षक है। हम इन तीनों बातों को शारीरिक जीवन के लिए प्रासंगिक बना सकते हैं: परमेश्वर जन्म के समय हमें शारीरिक जीवन देता है (देखें उत्पत्ति 2:7; प्रेरितों 17:25), अपनी परोपकारी आशिषों के द्वारा शारीरिक जीवन बनाए रखता है (मत्ती 5:45), और एक दिन वह शारीरिक रूप में मुर्दों को जिलाएगा (यूहन्ना 5:28, 29)। परन्तु मैं इसकी प्रासंगिकता विशेष रूप से आत्मिक जीवन के योग्य बनाना चाहता हूं:

- परमेश्वर आत्मिक जीवन का देने वाला है, क्योंकि वह उस जीवन का स्रोत है (देखें यूहन्ना 17:3)। उसके अनुग्रह के द्वारा, जो लोग पाप में मरे हैं वे मसीह में जीवित

हो जाते हैं (इफिसियों 2:5)।

- परमेश्वर आत्मिक जीवन का रक्षक है। पौलुस ने लिखा, ''मैं उसे जिसकी मैंने प्रतीति की है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है'' (2 तीमुथियुस 1:12)।
- परमेश्वर आत्मिक जीवन का बहाल करने वाला है। जब हम अपने पापों से मन फिराकर उसके पास वापस आते हैं, तो वह हमें उद्धार का आनन्द लौटा देगा (देखें भजन संहिता 51:12)।

परमेश्वर चाहता है कि आप जीवन पाएं ... पर क्या आपने उसके उद्धार का लाभ उठाया है?

- क्या अपने पश्चात्तापी विश्वास के नाम में (प्रेरितों 2:36-38) ''मसीह में'' बपतिस्मा ले लिया है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:26, 27)। ताकि आपको ''मसीह में'' नया जीवन मिल सके (रोमियों 6:23)?
- क्या आप ''जीवन के नये पन में'' प्रभु के साथ चल रहे हैं (रोमियों 6:4) ताकि वह आपको आपके पापों से शुद्ध करे (1 यूहन्ना 1:7) और दिन ब दिन आपको मज़बूत करे (इब्रानियों 13:5, 6)?
- यदि आप सही मार्ग से भटक गए हैं (देखें याकूब 5:19, 20), तो क्या आप पश्चात्ताप, अंगीकार और प्रार्थना में प्रभु के पास लौट आए हैं (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9) ताकि वह आपको जिला सके (देखें गलातियों 6:1; भजन संहिता 80:3, 7, 19)।

क्या आप जानते हैं कि आपको उस जीवन को पाने के लिए जो परमेश्वर ने आपको दिया है क्या करना आवश्यक है? तो फिर इसे टालें मत! ''इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है'' (याकूब 4:17)।

टिप्पणियां

[1]जोसेफ एल. गार्डनर, संस्क., हूज़ हू इन बाइबल (प्लीज़ेंटविल्ले, न्यू यॉर्क: रीडर्स डायजेस्ट एसोसिएशन, 1994), 99 से लिया गया। [2]यदि पति जीवित होता, तो राजा से उसकी सम्पत्ति लौटाने की विनती की होती। क्योंकि अपील स्त्री को करनी पड़ी (2 राजाओं 8:3, 5), इसका अर्थ है कि उसका पति मर चुका होगा। वह परिवार के पलिश्त में रहने के समय मर गया हो सकता है, पर यह कि एलीशा ने आयत 1 में केवल स्त्री से बात की और उसके घराने की बात, जो यह सुझाव देती है कि उसका पति पलिश्त में जाने से पहले ही मर चुका था। [3]यह सम्भवतया 2 राजाओं 4:38 वाला ही अकाल है। इस आयत पर हम अगले पाठ में बात करेंगे। [4]डोनाल्ड जे. वाइज़मैन, 1 एंड 2 किंग्स: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री, टिंडेल ओल्ड टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1993), 213. [5]योराम और एलीशा के तनावपूर्ण सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए (देखें 2 राजाओं 3:13, 14)। यदि राजा एलीशा के बारे में जानना चाहता था, तो उसने नबी को बुलाने के बजाय एलीशा के सेवक को ही बुलाना था। [6]सी. एफ़. केल एंड एफ़. डेलिश, ''1 एंड 2 किंग्स,'' कमैंट्री ऑन ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट, अंक 3, 1 एंड 2 किंग्स, 1 एंड 2 क्रोनिकल्स, एज्रा, नहेमायाह, एस्थर (पीबाडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 333. [7]वाइज़मैन, 213. [8]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन एंड थेलमा बी. कॉफ़मैन, कमैंट्री ऑन सेकंड किंग्स, जेम्स बर्टन कॉफ़मैन

कमैंट्रीज़, दि हिस्टॉरिकल बुक्स, अंक 6 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1992), 96. [9]जे. रॉबर्ट वेन्नॉय, नोट्स ऑन 2 किंग्स, दि *NIV*स्टडी बाइबल, संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 536. [10]अकाल के सात वर्ष थे, हम सोचेंगे कि लाभ को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए; परन्तु जैसा किसी ने कहा है, ''कुछ न होने से थोड़ा होना भला है।''